International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :editoraarf@gmail.com

रेने डेकार्ट का बुद्धिवादी चिन्तन

डॉ.सुमित्रा चारण

व्याख्याता,दर्शनशास्त्र विभाग

राजकीय डूंगर महाविधालय,बीकानेर(राज)

डेकार्ट एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे।बुद्धिवाद वह दार्शनिक सिद्धान्त है जिसमें समस्त ज्ञान का स्त्रोत आत्मा,बुद्धि तथा मन है।इसके अतिरिक्त बुद्धिवाद यह भी मानता है कि समस्त ज्ञान प्रागनुभविक प्रत्ययों के रूप में तथा सार्वभौमिक होता है। डेकार्ट ने ईश्वर,आत्मा तथा जड पदार्थ को जन्मजात प्रत्यय माना था।

आधुनिक बुद्धिवादियों में डेकार्ट ने ही सर्वप्रथम बताया था कि ज्ञान हमारी बुद्धि या आत्मा में प्रागनुभविक,सार्वभौमिक तथा अनिवार्य प्रत्ययों के रूप में अवस्थित रहता है।इसी कारण से डेकार्ट को बुद्धिवाद का जनक कहा जाता है।

सर्वप्रथम डेकार्ट ने दर्शन को मध्यकालीन रूढिवादिता और अंधविश्वास के गर्त से निकालकर बौद्धिक,वैज्ञानिक,स्वतन्त्र तथा तार्किक आकार प्रदान किया।इसी कारण से डेकार्ट को आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का जनक भी कहा जाता है।डेकार्ट के चिन्तन को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है –

- डेकार्ट का द्रव्य विचार – डेकार्ट के अनुसार द्रव्य वह है जो स्वतन्त्र आत्मनिर्भर तथा स्वयंभू हो।डेकार्ट ने दो प्रकार के द्रव्य माने हैं –सापेक्ष द्रव्य तथा निरपेक्ष द्रव्य। डेकार्ट ने दो द्रव्य स्वीकार किये, इसलिये उसका सिद्धान्त द्वैतवाद कहलाया है।इनका विस्तृत विवेचन निम्नलिखित अनुसार है–

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

- सापेक्ष द्रव्य – ये वे द्रव्य हैं जो आपस में एक–दूसरे से तो स्वतन्त्र हैं किन्तु सामूहिक रूप से निरपेक्ष द्रव्य (ईश्वर) पर निर्भर है। सापेक्ष द्रव्य दो हैं – जड़ और चेतन।ये दोनों सापेक्ष द्रव्य एक दूसरें से भिन्न लक्षणों से युक्त है क्योंकि जहा जड द्रव्य का लक्षण विस्तार है वही चेतन द्रव्य का लक्षण चिन्तन अथवा विचार है।मानव इन दोनों सापेक्ष द्रव्यों के संयुक्त रूप का उदाहरण है।

➢ सापेक्ष द्रव्य जड तथा चेतन में सम्बन्ध –जब डेकार्ट से पूछा गया कि जड़ शरीर का प्रभाव चेतन आत्मा पर क्यों पड़ता है और आत्मा का प्रभाव शरीर पर क्यों पड़ता है ? तो डेकार्ट ने बताया कि जड़ तथा चेतन या शरीर तथा आत्मा पीनीयल ग्रन्थि के माध्यम से परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया द्वारा एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।इसे ही क्रिया–प्रतिक्रियावाद का सिद्धान्त कहते है।

➢ मैं सोचता हूँ इसलिये मैं हूँ – आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये डेकार्ट एक प्रमाण देता है, जिसे कहते हैं – मैं सोचता हूँ इसलिये मैं हूँ।' फ्रेंच भाषा में इसे 'कोजिटो–इरगो–सम' कहते हैं। इस सिद्धान्त में डेकार्ट सभी वस्तुओं पर संदेह करता है। डेकार्ट आत्मा को सिद्ध करने के लिये सन्देह का सहारा लेता है और जगत की समस्त वस्तुओं पर सन्देह करते हैं ।इस सन्देह की प्रक्रिया से यह सिद्ध हो जाता है कि और किसी की सत्ता हो या न हो सन्देह की सत्ता तो है। प्रश्न उठता है कि सन्देह क्या है ? डेकार्ट कहते हैं कि सन्देह एक विचार है और यदि विचार का अस्तित्व है तो विचार करने वाली आत्मा का भी अस्तित्व होगा क्योंकि विचार आत्मा का गुण है।

➢ क्या डेकार्ट सन्देहवादी है ? – डेकार्ट सन्देहवादी नहीं है क्योंकि वे सन्देह से प्रारम्भ अवश्य करते हैं परन्तु अन्त विश्वास के साथ करते हैं। आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद डेकार्ट ईश्वर, जगत, गणितीय ज्ञान सभी की सत्ता स्वीकार करते हैं।डेकार्ट आत्मा का अस्तित्व आगमन विधि से सिद्ध करता है।डेकार्ट ईश्वर, जगत और गणित के ज्ञान को निगमन विधि से सिद्ध करता है।

- निरपेक्ष द्रव्य–यह एक ऐसा द्रव्य है जो किसी भी दृष्टि से किसी अन्य पर निर्भर नहीं है। डेकार्ट के दर्शन में एकमात्र ईश्वर ही निरपेक्ष द्रव्य है जिसकी प्रमुख विशेषताएँ है –

- ➢ ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है और यह व्यक्ति के सर्वश्रेष्ठ गुणों का सर्वश्रेष्ठ रूप है।
- ➢ ईश्वर जगत का निर्माण कारण है, जिसने जड़ और चेतन से इस जगत का निर्माण किया और अब इस जगत से अलग रहता है।
- ➢ ईश्वर दयालु है।
- ➢ ईश्वर धोखेबाज नहीं है।

- o डेकार्ट के अनुसार ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण –डेकार्ट ने ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत किये थे –
  - ➢ सत्तामूलक/प्रत्ययमूलक – हमारे मन में ईश्वर का प्रत्यय आता है या उपस्थित होता है। इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर है। काण्ट इसकी आलोचना में कहता है, मेरे मन में विचार आता है कि मेरे जेब में 100 रूपये हैं तो क्या वास्तव में वे हो जायेंगे।
  - ➢ कारण मूलक प्रमाण – इस तर्क में कहा गया है कि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कार्य को देखकर या जानकर उसके शक्तिशाली कारण का अनुमान लगाया जा सकता है। जैसे – हमारे मन में आने वाला ईश्वर का विचार कार्य है तो उसके कारण रूप में ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है।
  - ➢ विश्वमूलक प्रमाण – इस जगत की रचना मनुष्य नहीं कर सकता है। अतः जगत के रचयिता के रूप में ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है।
  - ➢ उद्देश्यमूलक प्रमाण – इस जगत में हमें सभी जगह व्यवस्था दिखाई देती है और इस व्यवस्था की स्थापना कोई बुद्धिमान और शक्तिशाली सत्ता ही कर सकती है एवम् वह ईश्वर है।

- डेकार्ट की दार्शनिक विधि – गणित का अधिक प्रयोग करने के लिये डेकार्ट की दार्शनिक विधि को गणितीय विधि भी कहते हैं।डेकार्ट ने अपनी पुस्तक डिसकोर्स ऑन मैथड में अपनी दार्शनिक विधि के निम्न चार सूत्र प्रस्तुत किये हैं –
  - o लक्षण सूत्र – इस सूत्र में कहा गया है कि किसी भी विचार या समस्या पर तब तक सन्देह कीजिये, जब तक सन्देह रहित ज्ञान प्राप्त न हो जाये।

- विश्लेषण सूत्र – सन्देह रहित ज्ञान प्राप्त करने के लिये किसी विचार या समस्या को ऐसे सरल टुकड़ों में तोड़ देना चाहिये जो स्वयंसिद्ध हो।
- संश्लेषण सूत्र–विश्लेषण की विधि के माध्यम से प्राप्त सरल टुकडों को पुनः आपस में जोडना ही संश्लेषण सूत्र है।
- आगमन सूत्र – अधिक से अधिक उदाहरण एकत्र करना ही आगमन है।

डेकार्ट कहता है कि दार्शनिक विधि के इन चार सूत्रों के आधार पर दो प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है जो स्वयंसिद्ध हो ।ये है –अन्त प्रज्ञात्मक ज्ञान तथा निगमनात्मक ज्ञान।

उपरोक्त सम्पूर्ण विवेचन से डेकार्ट के बुद्धिवादी चिन्तन को समझा जा सकता है ।डेकार्ट ने जिस बुद्धिवादी चिन्तन को प्रारम्भ किया उसका विकास करने का श्रेय स्पिनोजा को जाता है तथा जिसे लाइबनीज के द्वारा पराकाष्ठा पर पहुचाया गया था।बाद में बुद्धिवाद के विरूद्ध अनुभववादी चिन्तन का उदय हुआ जिसके जनक जॉन लॉक माने जाते है।जर्मनी के दार्शनिक काण्ट ने बुद्धिवाद तथा अनुभववाद के दोषों को दूर करके एक नई विचारधारा को प्रस्तुत किया जिसे समीक्षावाद कहा जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.या.मसीह,पाश्चात्य दर्शन समीक्षात्मक इतिहास

2.डॉ. शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण(थेलिस से हीगल तक)

3.डॉ. नित्यानंद मिश्र,समकालीन पाश्चात्य दर्शन

4.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

5.चन्द्रधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन

6.डॉ.शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय

7.हरिशंकर उपाध्याय,पाश्चात्य दर्शन का उदभव और विकास

8.नरेश प्रसाद त्रिपाठी,भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन

9.फ्रैंक थिली,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

10.प्रो.दयाकृष्ण,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

11.डॉ.ब्रहमस्वरूप अग्रवाल,पाश्चात्य दर्शन

12.डॉ.जगदीशचन्द्र जैन,पाश्चात्य समीक्षा दर्शन

13.डॉ.शशी भार्गव,पाश्चात्य दर्शन

14.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

15.डॉ.वेदप्रकाश वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा

16.डॉ. वेदप्रकाश वर्मा,दर्शन विवेचना

17.अम्बिकादत शर्मा,समेकित पाश्चात्य दर्शन समीक्षा

18.गुलाबराय,पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास

19.शंशधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

20.अशोक कुमार वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा(पाश्चात्य और भारतीय)

21.डॉ.नित्यानंद मिश्र,नीतिशास्त्रःसिद्धान्त और व्यवहार

22.सुधा चौधरी,नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार